ISSN 0974-8857

तुलसी प्रज्ञा

TULSÍ PRAJÑÁ

वर्ष 41 • अंक 162-163-164 • अप्रेल-दिसम्बर 2014

A Peer Reviewed Research Quarterly

जैन विश्वभारती संस्थान
लाडनूं - 341 306 (राजस्थान) भारत
JAIN VISHVA BHARATI INSTITUTE
Ladnun - 341 306, Rajasthan, India

Scanned with CamScanner

तुलसी प्रज्ञा

ISSN 0974-8857

TULSĪ PRAJÑĀ

A Peer Reviewed Research Quarterly of Jain Visva Bharati Institute

YEAR-41 · VOL.-162-163-164 APRIL-DECEMBER, 2014

अनुक्रमणिका / CONTENTS

ENGLISH SECTION

Subject	Author	Page No.
Ācārāṅga-Bhāṣyam	Ācārya Mahāprajña	7-12
Understanding Spirituality And Science	Prof. S.R. Bhatt	13-26
14 *Dhārā*s (Sequences and Sub-sequences) of *Trilokasāra* of Nemicandra (10th C CE) [1]	R.S. Shah	27-45
Managing Obesity in Adolecent School Children Through Yoga-Preksha Meditation	Chander Ramesh , Bala, Raj , Mishra Jpn	46-53
Relative Economics- A Paradigm of Transformation in System	Dr. Samani Rohini pragya	54-60
Applied Jain Non-violence: Meditation as a Remedial Approach	Dr Samani Shashi Prajñā	61-66
Countering the Stress in Children	Dr. Rashmi Dhar	67-74
Gāruḍa Upaniṣad: Mythology and Philosophy	Bidisha Choudhury	75-84
Achyarya Tulsi, Aṇuvrata and Social Work	Pratap Chandra Behera	85-90

Scanned with CamScanner

15. गाथासप्तशती, 2-82, का. प्र., 4-उदा. सं. 71
16. गाथासप्तशती, 978, का. प्र., 4-उदा. सं. 74
17. गाथासप्तशती, 5.53, का. प्र., 4-उदा. सं. 97
18. गाथासप्तशती, 705, का. प्र., 4-उदा. सं. 101
19. गाथासप्तशती, 940, का. प्र., 4-उदा. सं. 102
20. गाथासप्तशती, 876, का. प्र., 5-उदा. सं. 132
21. गाथासप्तशती, 886, का. प्र., 5-उदा. सं. 135
22. का. प्र., 5-उदा. सं. 136
23. गाथासप्तशती, 2.75, का. प्र., 5-उदा. सं. 138
24. का. प्र.-7-उदा. सं. 217, विषमबाणलीला-
25. कर्पूरमञ्जरी, 1-19, का. प्र., 7-उदा. सं. 310
26. का. प्र., 7-उदा. सं. 316, विषमबाणलीला-
27. का. प्र., 7-उदा. सं. 321, विषमबाणलीला-
28. गाथासप्तशती, 9.87, का. प्र., 7-उदा. सं. 329
29. कर्पूरमञ्जरी, 2.4, का. प्र., 8-उदा. सं. 343
30. गाथासप्तशती, 995, का. प्र., 10-उदा. सं. 401
31. गाथासप्तशती, 985, का. प्र., 10-उदा. सं. 408
32. गाथासप्तशती, 980, का. प्र., 10-उदा. सं. 423
33. गाथासप्तशती, 428, का. प्र., 10-उदा. सं. 428
34. गाथासप्तशती, 969, का. प्र., 10-उदा. सं. 451
35. गाथासप्तशती, 976, का. प्र., 10-उदा. सं. 458
36. गाथासप्तशती, 472, का. प्र., 10-उदा. सं. 472
37. कर्पूरमञ्जरी 2.9, का. प्र., 10-उदा. सं. 496
38. का. प्र., 10, उदा. सं. 516, विषमबाणलीला
39. गाथासप्तशती, 953, का. प्र., 10-उदा. सं. 428
40. गाथासप्तशती, 975, का. प्र., 10-उदा. सं. 530
41. गाथासप्तशती, 981, का. प्र., 10-उदा. सं. 534
42. गाथासप्तशती, 974, का. प्र., 10-उदा. सं. 552
43. गाथासप्तशती, 972, का. प्र., 10-उदा. सं. 555
44. गाथासप्तशती, 947, का. प्र., 10-उदा. सं. 561
45. गाथासप्तशती, 6.75, का. प्र., 10-उदा. सं. 565
46. गाथासप्तशती, 917, का. प्र., 10-उदा. सं. 570

वरिष्ठ-सहायकाचार्यः, साहित्यविभागः,
श्री. ला. ब. शा. रा. सं. विद्यापीठम्
नवदेहली-16

आचार्य तुलसी का स्वस्थ समाज संरचना में योगदान

—डॉ. सुनीता इन्दोरिया

"न ही मानुषात्परं किमपि सत्यम् " मनुष्य से परे कुछ भी सत्य नहीं है। इसलिए सत्य मानवोन्मुख और मानव सापेक्ष है। जो धर्म ऐसे आचार विचार सिखाता है जिनसे मनुष्य अपनी श्रेष्ठता को बनाए रखे, स्वयं को दैविक और भौतिक गुणों के संतुलन से समृद्ध रखे वहीं धर्म विश्व का श्रेष्ठतम धर्म हो सकता है। इस सत्य को विश्व के सभी धर्मों के धर्माधिकारियों ने स्वीकार कर इसका संदेश दिया है। इसी श्रृंखला में आचार्य तुलसी ने चिंतन किया और विश्वशांति, स्वस्थ समाज संरचना एवं व्यक्ति निर्माण की संकल्पना के रूप में अणुव्रत का समाधान दिया।

अणुव्रत व्यक्ति निर्माण और व्यक्तित्व परिवर्तन का प्रकल्प है। "सुधरे व्यक्ति समाज व्यक्ति से राष्ट्र स्वयं सुधरेगा" - अणुव्रत आन्दोलन का यह अभिक्रम व्यक्ति रूपांतरण से विश्व परिवर्तन की संकल्पना प्रस्तुत करता है। आचार्य तुलसी ने धार्मिक, राजनैतिक, आर्थिक, शैक्षिक एवं साहित्यिक आदि सभी क्षेत्रों में अणुव्रत आंदोलन की उपादेयता को सिद्ध कर इस आंदोलन के प्रवर्तन में अपनी उल्लेखनीय भूमिका का निवर्हन किया है।

धार्मिक क्षेत्र में भूमिका

चूंकि आचार्य तुलसी एक धार्मिक पुरूष थे अतएव उनके द्वारा प्रवर्तित अणुव्रत आंदोलन की भूमिका धार्मिक क्षेत्र में अवश्यंभावी रूप से उल्लेखनीय रही है। अणुव्रत एक सम्प्रदायविहीन धर्म है जिसका संबंध प्रत्येक धर्म से है। सम्प्रदाय और धर्म की विभाजन रेखाओं से ऊपर उठकर आचार्य तुलसी ने अणुव्रत आंदोलन को सर्व धर्म सद्भाव और धर्म निरपेक्षता का माध्यम बनाया। यह कहना समीचीन

प्रतीत होता है कि अणुव्रत की आचार संहिता को सब धर्म के लोगों ने, सभी सम्प्रदायों के अनुयायियों ने स्वीकार किया, साथ ही उन लोगों ने भी स्वीकार किया जो किसी धर्म अथवा सम्प्रदाय विशेष से संबधित नहीं थे। आचार्य तुलसी ने अणुव्रत आंदोलन के द्वारा जो धर्म क्रांति के सूत्र दिये वो इस बात की पुष्टि करते हैं कि अणुव्रत आंदोलन के द्वारा आचार्य तुलसी ने साम्प्रदायिक सद्भावना में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। सन् 1974 में आचार्य श्री ने धर्म क्रांति का एक पंचसूत्री कार्यक्रम प्रस्तुत किया जो वर्तमान के सन्दर्भ में बहुत मूल्यवान है। वे सूत्र है-

1. बौद्धिकता-धर्म कोरा अन्धविश्वास नहीं है, वह बुद्धिगम्य होना चाहिए।
2. प्रायोगिकता-धर्म केवल सुनने का नहीं, जीवन की प्रयोगशाला में परीक्षणीय तत्त्व है।
3. समाधायकता-धर्म को जीवन की समस्याओं का समाधान देने वाला होना चाहिए।
4. वर्तमान प्रधानता-धर्म का सम्बन्ध परलोक से नहीं वर्तमान जीवन से जुड़ना चाहिए।
5. साम्प्रदायिक सद्भाव-सब धर्म सम्प्रदायों के प्रति समादर और समभाव का विकास होना चाहिए।[1]

अणुव्रत आंदोलन के माध्यम से आचार्य तुलसी ने धार्मिक क्षेत्र में जिस उल्लेखनीय भूमिका का निर्वहन किया हैं उसे स्पष्ट करते हुए राजगोपालाचार्य ने कहा था - "अणुव्रत आंदोलन राष्ट्र के उत्थान के लिए एक सामूहिक आंदोलन है, ऐसे आंदोलन धर्म की पृष्ठभूमि को विकासशील बना सकते हैं। सब धर्म इस आंदोलन को बल दे सकते हैं। इसके प्रवर्तन ने विशाल दृष्टि से इसको रखा है, जिससे समस्त धर्मावलम्बी सहयोग कर सके। यह आंदोलन मूलभूत सिद्धान्तों को लिए हुए है।"[2]

आर्थिक क्षेत्र में भूमिका

नैतिक विकास और चारित्रिक उत्थान के उद्देश्य को लेकर प्रारम्भ हुए इस आंदोलन ने आर्थिक क्षेत्र में मूल्यों के समावेश की दिशा में भी महत्त्वपूर्ण कार्य किया है। आचार्य तुलसी ने अणुव्रत आंदोलन के माध्यम से ऐसी गतिविधियों को प्रारम्भ किया जिनसे आर्थिक जगत में नैतिकता की भावना प्रबल हुई। आचार्य तुलसी ने कहा था "नैतिक मूल्यों का ह्रास आज की सबसे बड़ी समस्या है। एक समय था जब व्यक्ति अपनी इज्जत और प्रतिष्ठा को अधिक महत्त्व देता था। आज के युग में अर्थ की प्रधानता हो रही है। उसके सामने प्रतिष्ठा और मानवता बौनी बन गयी है। प्राचीन कवियों की दृष्टि में वर्तमान युग की ज्वलंत समस्याओं का मूलभूत कारण है– अपूज्यों की पूजा और पूज्यों की पूजा का अभाव। जहां ऐसी मनोवृत्तियां पनपती हैं वहां दुर्भिक्ष, मरण, आंतक और भय होता है।"

अणुव्रत आंदोलन के दौरान विसर्जन का सूत्र वर्तमान आर्थिक समस्याओं के समाधान का एक सशक्त माध्यम बन सकता है। आचार्य तुलसी ने कहा था "मनुष्य जाति की एकता

और विसर्जन ये दोनों अणुव्रत प्रेरित समाज रचना के मुख्य सूत्र है। इस प्रकार की समाज रचना समाजवाद के अनुकूल ही नहीं होगी, अपितु उससे उत्पन्न हिंसा और प्रतिक्रिया की समस्याओं का समाधान देने वाली होगी।[3]

सामाजिक क्षेत्र में भूमिका

अणुव्रत आंदोलन के प्रवर्तन से तत्कालीन सामाजिक स्थितियों को परिवर्तित करने में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। आचार्य तुलसी ने स्वतन्त्र भारत के समाज को नारी-शोषण, मद्यपान चारित्रिक हीनता, जातिवाद, वर्ग संघर्ष सामाजिक कुरूतियों आदि सामाजिक बुराईयों से लिप्त देखा तो उनके मन मस्तिष्क में गहरी प्रतिक्रिया हुई। उस प्रतिक्रिया के परिणामस्वरूप अणुव्रत आंदोलन का प्रारम्भ हुआ। आचार्य तुलसी ने सामाजिक समस्याओं के समाधान के लिए अणुव्रत आंदोलन को माध्यम बनाया। अणुव्रत आंदोलन के द्वारा आचार्य तुलसी के अवदान को स्पष्ट करते हुए गांधीवादी चिंतक ए.के. मजूमदार ने कहा - भारतवर्ष सौभाग्यशाली है कि समय-समय पर कोई युगपुरूष हमारी सुप्त चेतना को उद्‌बुद्ध करने के लिए समाज में आते रहे हैं। उन युगपुरूष की कड़ी में मैं आचार्य तुलसी को देखता हूँ। वे अणुव्रत के द्वारा अनैतिकता के विरूद्ध लोकमत तैयार करते हैं। समाज में इसी चेतना के जागरण की आवश्यकता है। आचार्य तुलसी चैतन्य को जागृत करना चाहते हैं। यह कार्य होने के अनन्तर समाज की वह बद्धमूल अनैतिकता चाहे वे ज्वालामुखी क्यों न हो स्वतः ही निरसन की ओर हो जाती है।[4]

आचार्य तुलसी ने अणुव्रत आंदोलन के अन्तर्गत संचालित संस्कार निर्माण योजना में सामाजिक अभिशाप, अस्पृश्यता और जातिवाद को जड़ से उखाड़ने का प्रयास किया है। व्यक्ति की संग्रह और शोषण की वृत्ति के विरूद्ध उनके विसर्जन का सूत्र स्वस्थ समाज संरचना का एक महत्त्वपूर्ण अभिकल्प है। अणुव्रत के 'नया मोड़' कार्यक्रम के अन्तर्गत उन्होंने सामाजिक कुरूढियों को मिटाने का दिशानिर्देश दिया क्योंकि उनका मत था कि अर्थहीन और कौलातिक्रांत रूढ़ियां समाज के विकास में अवरोध उत्पन्न करती है। नारी समाज जो आधी दुनिया का प्रतिनिधित्व करती है, उस महिला शक्ति को आचार्य तुलसी ने अणुव्रत आंदोलन के माध्यम से अपने अस्तित्व और भावनाओं का बोध कराया। उन्होंने समाज में व्याप्त रूढ संस्कार, स्वार्थपरक मनोवृत्ति, कृत्रिम प्रतिष्ठा का व्यामोह, समाज के अर्थहीन मापदण्ड और सामाजिक बुराईयों को अणुव्रत आंदोलन के माध्यम से दूर करने का सार्थक प्रयास किया और एक अहिंसक एवं स्वस्थ समाज की नींव रखी।

राजनैतिक क्षेत्र में भूमिका

आचार्य तुलसी ने अणुव्रत आंदोलन के माध्यम से जहाँ एक और सामाजिक आर्थिक और धार्मिक क्षेत्र की समस्याओं के समाधान में अपना युक्तिसंगत चिंतन दिया वहीं दूसरी

और राजनीति का क्षेत्र भी उनके चिंतन से लाभान्वित हुआ। आचार्य तुलसी राजनैतिक विकेन्द्रीकरण के समर्थक थे, जिसके लिए वे लोकतन्त्र (प्रजातंत्र) को सर्वोत्तम माध्यम मानते थे। लोकतंत्र में समानता, स्वतन्त्रता, सहअस्तित्व जैसे मूल्यों की स्थापना के लिए वे चुनाव शुद्धि के प्रबल समर्थक थे क्योंकि चुनाव पद्धति लोकतंत्र का आधार स्तम्भ होती है। चुनाव शुद्धि के लिए निम्नांकित बातें आवश्यक मानते थे -

1 हम विजयी बनें या न बनें, पर चुनाव में भ्रष्ट तरीकों का प्रयोग न हो।

2 सत्तारूढ दल चुनाव शुद्धि के लिए संकल्पबद्ध हो।

3 जनमत जागृत हो।[5]

लोकतन्त्र की स्वस्थता के लिए अणुव्रत आंदोलन के कार्यक्रमों के अर्न्तगत बनायी गयी आचार संहिताएँ अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हैं। मतदाता, प्रत्याशी आदि के लिए बनायी गयी आचार संहिताएँ आधुनिक राजनीति के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण स्थान रखती हैं। आचार्य तुलसी राजनीतिक क्षेत्र में अणुव्रत आंदोलन के द्वारा जिन मूल्यों और नैतिकता की स्थापना करना चाहते थे वह उनके इन शब्दों से अभिव्यक्त होती है। उन्होंने कहा– लोकतंत्र में सत्ता पाने का अधिकार बुरा नहीं है पर नैतिकता और सिद्धान्तवादिता को दूर रखकर हिंसा, उच्छृंखलता द्वारा केवल सत्ता पाने का प्रयत्न जनतंत्र का कलंक है। ऐसा लगता है कि राजनीति का अर्थ देश में सुव्यवस्था बनाए रखना नहीं, अपनी सत्ता और कुर्सी बनाए रखना है। राजनीति का अर्थ उस नीतिनिपुण व्यक्तित्व से नहीं जो हर कीमत पर राष्ट्र की प्रगति, विकास-विस्तार और समृद्धि को सर्वोपरि महत्त्व दे किन्तु उस विदूषक विशारद व्यक्तित्व से है, जो राष्ट्र के विकास और समृद्धि को अवनति के गर्त में फेंककर भी अपनी कुर्सी को महत्त्व देता है।[6]

शैक्षिक क्षेत्र में भूमिका

शिक्षा समाज और राष्ट्र के विकास का मूल आधार है। सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक और नैतिक प्रगति का आधार स्तम्भ भी शिक्षा ही है। शिक्षा की इस उपादेयता को स्वीकारते हुए आचार्य तुलसी ने अणुव्रत आन्दोलन के माध्यम से एक नवीन शिक्षा पद्धति जन-सम्मुख रखी जो व्यक्ति के बौद्धिक, शारिरिक, मानसिक, भावनात्मक अर्थात सर्वांगीण विकास की पक्षधर थी। आचार्य तुलसो ने कहा था 'शिक्षा व्यक्तित्व निर्माण का सर्वाधिक प्रशस्त माध्यम है। एक ओर शिक्षा जीने की कला सिखाती है तो दूसरी और पारस्परिक व्यवहार में दक्षता लाती है।[7] वर्तमान शिक्षा पद्धति जहाँ बौद्धिक और शारीरिक विकास को प्राथमिकता देती है वहीं दूसरी मूल्य बोध, चरित्र- विकास, भावनात्मक विकास आदि की उपेक्षा कर रही है। परिणामस्वरूप समाज में अशांति, अराजकता और चरित्रहीनता का वर्चस्व बढ़ता जा रहा है।

समाज की इस दुरूह समस्या को समाधान देने के लिए शिक्षा जगत को आचार्य तुलसी ने जीवन विज्ञान की अभिनव अवधारणा प्रदान की। जीवन विज्ञान से तात्पर्य है - संतुलित

शिक्षा प्रणाली। बौद्धिक विकास के साथ-साथ यह शिक्षा पद्धति प्रेक्षाध्यान के द्वारा भावनात्मक और मानसिक विकास की भी पोषक है। संतुलित शिक्षा पद्धति से संतुलित व्यक्तित्व का और संतुलित समाज का निर्माण संभव है। इसलिए गांधी जी ने भी शिक्षा के द्वारा चारित्रिक तथा भावनात्मक विकास पर बल दिया। उन्होंने शिक्षा का उद्देश्य चारित्रिक विकास माना और चारित्रिक विकास से अभिप्राय व्यक्ति में साहस, शक्ति, धैर्य, क्षमता, त्याग आदि सद्गुणों का विकास माना। एक संतुलित शिक्षा पद्धति की प्रसंगिकता को स्पष्ट करते हुए आचार्य तुलसी ने कहा था-"वही शिक्षा अपनी प्रासंगिकता बनाये रखती है जो व्यक्तित्व निर्माण और सह-जीवन की जरूरतों के अनुसार जीवन शैली का विकास कर पाए। जिस शिक्षा से अनुशासन, धैर्य, सह-अस्तित्व, जागरूकता आदि जीवन मूल्यों का विकास नहीं होता उस शिक्षा की जीवंतता के आगे एक प्रश्नचिन्ह् उभर आता है।"[8]

साहित्यिक क्षेत्र में भूमिका

भारतीय संस्कृति की साहित्यिक परम्परा में संत साहित्य का वैशिष्ट्य सदैव रहा है। संत साहित्य वर्तमान के साथ-साथ भविष्य के लिए भी प्रेरणा स्त्रोत होता है। साहित्य की कसौटी को स्पष्ट करते हुए पं. हजारी प्रसाद द्विवेदी ने कहा था- "जो साहित्य मनुष्य को दुर्गति, हीनता और परमुखापेक्षिता से न बचा सके जो उसकी आत्मा को तेजोदीप्त न बना सके, हृदय को परदुःखातर और संवेदनशील न बना सके, उसे साहित्य कहने में मुझे संकोच होता है।"[9] हजारी प्रसाद द्विवेदी की इस कसौटी को स्पष्ट करते हुए आचार्य तुलसी का साहित्य संपूर्णता खरा उतरता है। अणुव्रत आंदोलन के द्वारा आचार्य तुलसी ने साहित्य जगत को भी अनुपम देन दी है। आचार्य तुलसी ने कलम और वाणी का सही सदुपयोग कर ऐसा साहित्य रचा है जो अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाने, जड़ता, अन्धविश्वास और अज्ञान से मुक्ति पाने, शोषण और अन्याय से मुक्ति पाने, व्यक्ति और समाज को बदलने तथा दायित्व बोध जगाने में अपना वैशिष्ट्य रखता है। उदाहरण के लिए उनके द्वारा रचित साहित्य अणुव्रत से सम्बन्धित अनेक पुस्तके प्रकाश में आई है। अणुव्रत आन्दोलन की वैचारिक क्रांति को व्यापक बनाने में आचार्य तुलसी द्वारा रचित साहित्य का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है।

उपर्युक्त समस्त विवेचन के आधार पर यह कहना अतिश्योक्तिपूर्ण नहीं होगा कि अणुव्रत आंदोलन के माध्यम से आचार्य तुलसी ने समाज के प्रत्येक क्षेत्र में नैतिकता और मानवीय मूल्यों की प्रस्थापना की पुरजोर अपील की है। इस आंदोलन के प्रवर्तन से आचार्य तुलसी ने मानव जाति को अभिनव अवदान दिये हैं। सामाजिक समानता और सामाजिक न्याय की वकालत कर उन्होंने समाज को नैतिकता के सूत्र में बांधने का प्रयास किया। सर्व धर्म समभाव और धार्मिक सहिष्णुता के प्रति आचार्य तुलसी की दृष्टि ने धर्म और नैतिकता का समर्थन किया। राजनीति जैसे क्षेत्र में भी आचार संहिता और मूल्यों की अनिवार्यता को स्वीकार कर उन्होनें राजनीति और नीति के वास्तविक सम्बन्ध को स्पष्ट किया। आर्थिक

जगत जो प्रायः नैतिकता-विहीन माना जाता रहा है उस क्षेत्र में भी व्यापारी, उपभोक्ता आदि वर्गों के लिए आचार संहिताओं का निर्माण कर अर्थशास्त्र और नीतिशास्त्र के मध्य सम्बन्ध स्थापित किया। अणुव्रत आन्दोलन के माध्यम से आचार्य तुलसी ने मूल्यपरक शिक्षा के रूप में जीवन विज्ञान का अवदान शिक्षा जगत को दिया। चरित्र निर्माण और नैतिकता के विकास के उद्देश्य को लेकर प्रारम्भ हुए अणुव्रत आन्दोलन के द्वारा आचार्य तुलसी ने समाज के क्षेत्र में नैतिकता के समावेश की योजना रखी। अणुव्रत आन्दोलन के प्रवर्तन में उनकी भूमिका विश्वशांति के उद्देश्य को पूर्ण करने के लिए स्वस्थ समाज की संरचना व्यष्टि से समष्टि के कल्याण तक की थी।

सन्दर्भ सूची -

1. इतस्ततः, साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा, आदर्श साहित्य संघ, चूरू, 1988, पृ. 47-48,
2. जन-जन की दृष्टि में अणुव्रत आंदोलन, सम्पा. मुनि मोहजीत कुमार, आदर्श साहित्य संघ, चूरू, 1996, पृ. 16
3. अनैतिकता की धूप : अणुव्रत की छतरी, आचार्य तुलसी, आदर्श साहित्य संघ, चूरू, तृतीय संस्करण, 1994, पृ. 210
4. जन-जन की दृष्टि में अणुव्रत आंदोलन, सम्पा. मुनि मोहजीत कुमार, आदर्श साहित्य संघ, चूरू, 1996, पृ. 111
5. एक बूंद एक सागर (खण्ड-1), डॉ. समणी कुसुमप्रज्ञा, जैन विश्व भारती, लाडनूं द्वितीय संस्करण, 2005, पृ. 431
6. आचार्य तुलसी साहित्य पर्यवेक्षण, समणी कुसुमप्रज्ञा, जैन विश्व भारती, लाडनूं, 1994, पृ. 154
7 जीवन विज्ञान स्वस्थ समाज रचना का संकल्प, युवाचार्य महाप्रज्ञ, जैन विश्व भारती, लाडनूं, चतुर्थ संस्करण, 1991, पृ. 19
8 अणुव्रत (पाक्षिक - मार्च-अप्रैल), 1999, पृ. 169
9 आचार्य तुलसी साहित्य : एक पर्यवेक्षण, समणी कुसुमप्रज्ञा, जैन विश्व भारती, लाडनूं, 1994, पृ. 02

— सहायक आचार्या

जैनविद्या एवं तुलनात्मक धर्म तथा दर्शन विभाग

Tulsī Prajñā

A Quarterly Research Journal

Dear Colleague,

Tulsī Prajñā, a Bi-lingual Research Journal (ISSN 0974-8857) of Jain Vishva Bharati Institute, is being published quarterly; March, June, September and December since four decades. This peer reviewed journal deals with Oriental Studies in general and Jainism in particular referred and elucidating the ancient saying with modern Science.

Guidelines for Contributors

The Journal has been upgraded as a **Peer Reviewed Journal.** Therefore, all contributions will be referred to specialists in respective field for expert evaluation. Articles based on discovery of new facts or new interpretations of or relationship between already discovered facts will be welcomed.

1. Tulsī Prajñā mainly focuses on Indological subjects, covering the areas, such as, Language, Literature, History, Philosophy (all traditions and schools), Arts, Discourse analysis and so on.
2. Editor reserves the right to make final alterations in the text, on linguistic and stylistic grounds, so that the entry conforms to the uniform standard required for the journal.
3. All scripts should be in duplicate with soft copy and typed double-spaced, including quotations, notes and references etc.
4. Soft copy should be in Page-Maker format with necessary diacritical marks and the Times-Norman script should be used in English articles. For the articles written in *Devanāgarī* script, Shree Lipi/Kruti-Dev should be used.
5. Quotation is expected to be identical verbatim et litteratum with the original; To indicate ellipsis three single dots are to be used; Long quotations consisting of five or more lines do not need inverted commas.
6. Contributors must provide their complete mailing addresses and email address along with their articles.
7. Length of the article may be restricted between 4000 and 6000 words.
8. Concise Oxford Dictionary or Oxford advanced Dictionary (latest edition) should be followed in spelling, punctuation and hyphenation. Where two spellings exist, British style should be accepted and not the American; for example, 'programme' and not 'program' and 'colour', not 'color' etc.
9. References and notes should be numbered consecutively throughout the article and typed on a separate page at the end.
10. References are to be given generally in the order – the name or initials of the author followed by surname, the title of the work (in italics), the publisher, the place of publication and the page number/s for
    Books:
    Edited Volumes:
    Articles in Books:
    Articles in Edited Volumes:
    Articles in Journals:
    Articles in Web pages:
11. Book Reviews must contain name of author/editor, place of publication and publisher, year of publication, number of pages and price.
12. Send your article on e-mail-
    tulsiprajnarj@gmail.com,
    anljvbi@gmail.com

- Dr. Anil Dhar
Editor